RESEARCH RIVAL **ISSN: 2456-1096**
(A Multi-Disciplinary Peer-Reviewed and Refereed Bi-Annual Research Journal) **Vol. 10, Issue 2**
July-December 2024

जींद जिले का शास्त्रीय संगीत से संबंध

डॉ॰ वन्दना शर्मा[1], रीनु शर्मा[2]
[1]असिस्टैंट प्रोफेसर संगीत गायन, वनस्थलि विश्वविद्यालय वनस्थलि, [2]असिसटैंट प्रोफेसर संगीत वादन,
एम० डी० एस० डी कॉलेज, अम्बाला शहर
E-mail: reenu3646sharma@gmail.com

सारांश :
जींद जिला, हरियाणा की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का एक महत्वपूर्ण केंद्र रहा है, जिसमें लोक संगीत और शास्त्रीय संगीत दोनों की गहरी जड़ें हैं। यह शोध पत्र जींद जिले के शास्त्रीय संगीत से संबंध की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक प्रभाव और वर्तमान परिदृश्य का विश्लेषण करता है। इस अध्ययन में जींद जिले में शास्त्रीय संगीत की परंपराओं, प्रमुख संगीतज्ञों, गुरूकुल परंपरा और स्थानीय संगीत संस्थानों की भूमिका पर प्रकाश डाला गया है। साथ ही, यह शोध लोक संगीत और शास्त्रीय संगीत के पारस्परिक प्रभाव को भी समझने का प्रयास करता है। शोध के दौरान यह स्पष्ट होता है कि जींद जिले में शास्त्रीय संगीत का विकास विभिन्न सामाजिक और सांस्कृतिक पहलुओं से प्रभावित रहा है। हालांकि, आधुनिकता और पाश्चात्य प्रभावों के कारण यह परंपरा कुछ हद तक संघर्षरत भी रही है। निष्कर्षतः, इस अध्ययन में जींद जिले में शास्त्रीय संगीत के संरक्षण और प्रचार–प्रसार के लिए आवश्यक उपायों पर भी चर्चा की गई है।

मुख्य शब्दः जींद जिला, शास्त्रीय संगीत, हरियाणा, गुरूकुल परंपरा, सांस्कृतिक विरासत, लोक संगीत, संगीत शिक्षा।

भूमिका :
जींद जिला हरियाणा के सबसे पहले 7 जिलों में से एक है। जब से हरियाणा राज्य का निर्माण हुआ तब से ही जींद जिला स्थित है। ''जींद जिला हरियाणा के उत्तर में 29.3′ और 29.51′ उत्तर अक्षांश और 75.33′ और 76.47′ पूर्वी देशांतर के बीच है।''1 यह हरियाणा के सबसे पुराने जिलों में से एक है, यह सबसे पहले 7 राज्यों में से एक है, यह मध्य हरियाणा में स्थित है और जाट बैल्ट का चौथा जिला है (यानी सोनीपत, रोहतक, हिसार और जींद)। जींद हरियाणा में स्थित एक प्रमख शहर है, महाभारत की कई कथाएं जींद से जुड़ी हुई हैं। इसके अलावा वामन पुराण, नारद पुराण और पद्म पुराण में भी जींद का उल्लेख मिला है। यह कहा जाता है कि महाभारत काल में पांडवों ने यहां पर विजय की देवी जयंती देवी मंदिर का निर्माण किया था और कौरवों को हराने के लिए उन्होंने इसी मंदिर में पूजा की थी। जयंती देवी के नाम पर ही इस शहर का नाम जयंता पुरी रखा गया और समय के साथ–साथ इसका नाम जयंता पुरी से बदलकर जींद हो गया।

संगीत से तात्पर्य :–
''नदी का कल–कल करता जल, सुबह–शाम चिड़िया की चहचहाहट, झरने की झर–झर, हवा की सांय–सांय, रात के सन्नाटे में झींगुरों की झिन–झिन और आंधी में हवा की हरर–हरर की आवाजें मनुष्य आदि काल से सुनता आया है, विभिन्न पशु–पक्षियों की आवाजें भी वह सुनता आया है। इन्हीं सब ध्वनियों में उसने अंतर करना भी सीखा। किसी वृक्ष की सूखी टहनी से जब उसने पत्थरों पर वार किया होगा तब उसने एक अलग ही ध्वनि सुनी होगी। सूखी फलियों को हिलाया होगा तो उसके अंदर से बीज बज उठे होंगे। पत्ती को मोड़कर उसमें फूंक मारी होगी तो उसे सीटी जैसी ध्वनि सुनाई दी होगी। मनुष्य के मन में यह बात तो जरूर आई होगी कि इन सब को बजाया जा सकता है। यहीं से वाद्यों का एक रूप उसके मन में बैठ गया होगा। आज भी न्यू गिनी के आदिवासी सूखी हुई फलियों के गुच्छे डोरी में बांधकर अपनी कमर से लपेट लेते हैं। जब वे नाचते हैं तो इन फलियों के बीज बजते हैं, जिससे नृत्य में किसी और वाद्य की जरूरत ही नही पडती है।''2 इस युग को हम प्राक् संगीत युग कह सकते हैं जिसमें मनुष्य ने प्रकृति की ध्वनियों और उनकी विशिष्ट लय को जानने और समझने की कोशिश की। माना जाता है कि संगीत का आदिम स्रोत प्राकृतिक ध्वनियां ही हैं, लेकिन ये ध्वनियां संगीत का आधार नहीं हैं। सवाल यह है कि आखिर ऐसी कौन सी

ध्वनियां हैं जो संगीत पैदा कर सकती हैं। संगीत केवल उन्हीं ध्वनियों से निकलता है जो हमारे मन में किसी न किसी भाव से उपजती हैं। ''सुव्यवस्थित ध्वनि जो रस की सृष्टि से उत्पन्न होती है वह संगीत कहलाती है। संगीत के मोहक स्वरों व मादकता का जीव जगत पर जो प्रभाव पड़ा है वह किसी से भी नहीं छिपा है। संगीत हमारे जीवन में आंतरिक और आवश्यक भूमिका निभाता है। संगीत, ध्यान और योग से अधिक श्रेष्ठ है क्योंकि यह हमारे शरीर और दिमाग दोनों को लाभ पहुंचाता है। संगीत कला जिसे ललित कलाओं में प्रमुख व सर्वश्रेष्ठ माना जाता है, एक संपूर्ण शास्त्र के रूप में भी परिलक्षित हुई है। इस कला का सार नाद पर ही आधारित है। शास्त्रों में नाद को ब्रह्म माना गया है तथा मानव के अंतःकरण भी ब्रह्म रूप माने गए हैं।''3

''प्राचीन काल से ही संगीत के दो रूप प्रचलित रहे हैं– मार्गी और देसी संगीत। कालांतर में मार्गी संगीत लुप्त हो गया और देसी संगीत का दो रूपों में विकास हुआ। एक वह था जिसका आधार शास्त्र था और तथा जिसको विद्वानों एवं कलाकारों ने अपने अध्ययन और साधना का विषय बनाया जिसे शास्त्रीय संगीत की संज्ञा दी जाती है। दूसरा वह था जो काल और देश के अनुरूप प्रकृति के स्वच्छंद वातावरण में स्वभाविक रूप से पलता हुआ उत्तरोत्तर विकास को प्राप्त होता रहा, जिसे लोक संगीत के नाम से जाना जाता है।''4

शास्त्रीय संगीत से तात्पर्य :–

शास्त्रीय संगीत के महत्व पर प्रकाश डालने से पूर्व यह स्पष्ट करना अत्यंत महत्वपूर्ण है कि वास्तव में शास्त्रीय संगीत क्या है। शास्त्रीय संगीत क्या है, इस विषय को लेकर तमाम गलत धारणाएं व्याप्त हैं। शास्त्रीय संगीत की उत्पति बेनिस की शास्त्रीय अभिव्यक्ति से हुई है, जो 18वीं शताब्दी में विकसित हुई और 19वीं शताब्दी में तीन प्रमुख संगीतकारों ने इसे प्रकाश में लाया। हेडन, मोजार्ट और बीथोवेन, तीन प्रतिभाशाली व्यक्तियों ने मिलकर शास्त्रीय संगीत को प्रसिद्धि दिलायी। शास्त्रीय संगीत के कुछ संगीतकार उत्साही और वादक वृंदीय लय का प्रयोग शास्त्रीय संगीत में करते हैं। लय में आवर्ती रचना और समस्वरित लय के प्रयोग ने इसे बहुत बडे स्तर पर परिभाषित किया है, साथ ही स्वर के उतार–चढाव के बीच में विस्तार के प्रयोग ने तन्यता को जन्म दिया है। शास्त्रीय संगीत को क्लासिकल म्यूजिक भी कहते हैं। शास्त्रीय गायन सुर–प्रधान होता है, शब्द–प्रधान नहीं। इसमें सुर का महत्व होता है (उसके चढाव–उतार का, शब्द और अर्थ का नहीं)। इसको जहां शास्त्रीय संगीत–ध्वनि विषयक साधना के अभ्यस्त कान ही समझ सकते हैं, अनभ्यस्त कान भी शब्दों का अर्थ जानने मात्र से देशी गानों या लोकगीत का सुख ले सकते हैं। इससे अनेक लोग स्वाभाविक ही ऊब भी जाते हैं पर इसके ऊबने का कारण उस संगीतज्ञ की कमजोरी नहीं बल्कि लोगों में जानकारी की कमी है। शास्त्रीय संगीत की प्रचलित परिभाषा के अनुसार ध्रुपद, धमार होरी, दादरा एवं ख्याल गायन को शास्त्रीय संगीत कहते हैं तथा ठुमरी, ग़ज़ल, कव्वाली, भजन और सिने संगीत को उप शास्त्रीय गायन कहा जाता है।''5

शास्त्रीय संगीत की उपयोगिता कई अलग–अलग क्षेत्रों में देखी जा सकती है। उदाहरण के लिए यह सिद्ध हो चुका है कि शास्त्रीय संगीत मन व मस्तिष्क के लिए लाभदायक है। यह अभिव्यक्ति का एक अलग माध्यम है तथा इसका प्रयोग उपचार के रूप में भी किया जा सकता है। ''शास्त्रीय संगीत का सबसे महत्वपूर्ण लाभ यह है कि यह मस्तिष्क को अधिक सक्रिय तथा स्फुर्त बनाता है। बच्चों की संगीत जिज्ञासा को विकसित करने के लिए उन पर शोध किये गये, जिससे शास्त्रीय संगीत को थोड़ी देर सुनने मात्र से बच्चों के मस्तिष्क पर इसका बहुत ही सकरात्मक प्रभाव देखा गया।''6

भारतीय शास्त्रीय संगीत :–

''भारतीय शास्त्रीय संगीत की उत्पत्ति सबसे पुराने हिंदू शास्त्र सामवेद से मानी जाती है। इसमें सा, रे, गा, मा, पा, धा, नी और सा के आठ बुनयादी सुरों के साथ पूर्ण संगीत प्रणाली है। इसकी प्रकृति मोनोफोनिक (एक लय में गाया जाने वाला) है। भारतीय शास्त्रीय संगीत में इस्तेमाल किए जाने वाले यंत्रों में वीणा, मृदंगम्, तबला, कंजिर, तंबू, बांसुरी, कसतार, वायलिन, गौतविदम और सारंगी शामिल हैं। भारतीय शास्त्रीय संगीत की दो मुख्य शैलीयां हिंदुस्तानी संगीत (उत्तर भारत) और कर्नाटक संगीत (दक्षिण भारत) हैं। भगवान कृष्ण और प्रकृति का सौंदर्य हिन्दुस्तानी संगीत के मुख्य विषय हैं। हिंदुस्तानी संगीत के कुछ उल्लेखनीय अधिवक्ताओं में अलाउद्दीन खान, कवलायत खान, बिस्मिल्लाह खान, भीमसेन जोशी और कई अन्य हैं। कर्नाटक संगीत एक प्राचीन संगीत है जो दक्षिणी भारत में उत्पन्न हुआ था। इसको मूल दैवीय माना जाता है।''7 इसके कुछ प्रमुख संगीतकार मैसूर सदाशिव राव, तियाराजा, मुथुस्वामी और अन्य हैं। भारतीय शास्त्रीय संगीत की उत्पत्ति वेदों से मानी जाती है। सामवेद में संगीत के बारे में गहराई से चर्चा की गई है। भारतीय शास्त्रीय संगीत गहरे तक आध्यात्मिकता से प्रभावित रहा है, इसलिए इसकी शुरुआत मनुष्य जीवन के अंतिम लक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति के साधन के रूप में हुई। संगीत की महत्ता इस बात से भी स्पष्ट है कि भारतीय आचार्यों ने इसे पंचम वेद या गंधर्व वेद की संज्ञा दी है। भरत मुनि का नाट्यशास्त्र पहला ऐसा ग्रंथ था जिसमें नाटक, नृत्य और संगीत के मूल सिद्धातों का प्रतिपादन किया गया है। ''भारतीय शास्त्रीय संगीत की 2 प्रमुख शैलियां निम्नलिखित हैं–

हिंदुस्तानी शैली

कर्नाटक शैली।''8

जींद जिले का शास्त्रीय संगीत से संबंध :– जींद, हरियाणा का जाना–पहचाना जिला है। मगर बहुत कम लोग जानते हैं कि जींद का शास्त्रीय संगीत से एकदम अनोखा नाता है। जिले के एक दर्जन से ज्यादा गांवों के नाम राग, ताल, लय और वाद्य यंत्रों पर आधारित हैं। इसमें भी भूगोल और सांझ–सवेरे का ध्यान रखा गया है। जिले की पूर्व दिशा में पड़ने वाला गांव मलार सुबह गाए जाने वाले राग मल्हार पर आधारित है। इसी तरह सुबह के राग कलावती पर गांव कलावती का नाम है। "हरि के हरियाणा में जींद रियासत का अपना रुतबा रहा है। अब जींद जिला प्रदेश के सबसे पुराने जिलों में शामिल है। सरस्वती के कांठे जींद की थाटी के अनेक गांव के नाम भारतीय शास्त्रीय संगीत के रागों के नाम पर रखे गए हैं। ये अजब बात है कि जींद रियासत के राजा सरूप सिंह और रघबीर सिंह संगीत प्रेमी थे जिन्होंने जींद के ज्यादातर गांवों के नाम भारतीय शास्त्रीय संगीत के राग, रागनी, ताल, लय के नाम पर रखे। इस धरती को ज्ञान, विद्या, कला, संगीत की देवी सरस्वती नदी को आधार मानकर इन गांवों को ऐसे नाम दिए ।''9 इन गांवों के नाम रागों पर आधारित होने के पीछे जींद रियासत के राजाओं का शास्त्रीय संगीत और साहित्य प्रेम और सरस्वती नदी का इस क्षेत्र के आसपास होना रहा है। जींद रियासत दिल्ली दरबार के अधीन होने के नाते क्षेत्र के लोगों की कला का प्रयोग सैनिकों के मनोरंजन के लिए करती थी। यही वजह है कि यहां के लोगों को राजदरबार में पूरा सम्मान मिलता रहा। पुराने वाद्ययंत्रों के बजाने वाले जितने इस क्षेत्र में थे उतने और कहीं नहीं थे। "जींद से मात्र 22 किलोमीटर दूर सरस्वती नदी का गांव था राखीगढी। खुदाई के दौरान पुरात्त्व विभाग को सरस्वती नदी सभ्यता के अवशेष मिले हैं। जो इस बात को इंगित करने के लिए काफी हैं कि इस क्षेत्र के लोग सरस्वती के उपासक प्रकृतिवश भी रहे हैं।''10

उनका ध्येय था कि क्षेत्र में सुख और शांति बनी रहे और कला की विभिन्न विधाएं फलें–फूलें। इन गांवों में शास्त्रीय संगीत के गायन की ठेठ स्थानीय परंपरा रही है। तभी तो कई गांवों के नाम राग, ताल, स्वर, लय और वाद्ययंत्रों पर होने से लगता है कि हरियाणा के इस ग्रामीण आंचल में शास्त्रीय संगीत की जड़ें कहीं ज्यादा गहरी रही हैं। दिल्ली दरबार में यहां के शाही लोक कलाकार और संगीतज्ञ अपने फन की महारत की वजह से अपने गांवों की शान बने होंगे।

जींद जिले के सभी गांवों के नाम रागों पर आधारितः–

राग और गावों के नाम एक ही है :–

मलार : बिलावल थाट से उत्पन्न मल्हार राग है।

पिल्लूखेड़ा : राग पीलू काफी थाट से उत्पन्न है।

कलावती : कलावती राग कर्नाटक पद्धति से आया है।

धर्मगढ़ : कल्याण थाट से उत्पन्न राग है।

मालश्रीखेडा : मालश्री राग कल्याण थाट के अंतर्गत है।

देशखेड़ा : देश राग खमाज थाट का है।

खोडा खेमावति : राग खम्बावती खमाज थाट से उत्पन्न हुआ है।

जयजयवंती : जय–जय वंती राग खमाज थाट का है।

जींद : यह नाम जयंत राग जयजयवंती और मियां मल्हार का मिश्र स्वरूप है।

भैरव खेड़ा : भैरव राग भैरव थाट का आश्रय राग है।

गुलकनी : गुणकली राग का थाट बिलावल है।

खमाज खेड़ा : खमाज राग खमाज थाट से ही उत्पन्न है।

खटकड़ : असावरी थाट से उत्पन्न खट राग है।

जीतगढ़ : मारवा थाट से उत्पन्न चैत राग है।

आलनजोगी खेड़ा : राग जोगिया भैरव थाट का राग है।

ललित खेड़ा : ललित राग मारवा थाट का राग है।

मांडीखुर्द : मांड राग बिलावल थाट का संपूर्ण राग है।

श्री रागखेड़ा : श्रीराग पूर्वी थाट का राग है।

मालवी : मालकौंस भैरवी थाट का राग है।

सिवाहा : राग शिवमतौरव, भैरव थाट का है।

मिरगढ़ : हमीर राग कल्याण थाट से उत्पन्न होता है।

अलेवा : अल्हैया बिलावत राग है।

सिंधवी खेड़ा : राग सिंधवी पर आधारित।

ढिगाना, तलौड़ा भागखेड़ा आदि

निष्कर्ष :–

निष्कर्ष रूप से हम यह कह सकते हैं कि जींद जिले का शास्त्रीय संगीत से बहुत गहरा संबंध रहा है। इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि जींद रियासत के राजा–महाराजा शुरुआत से ही संगीत प्रेमी रहे हैं, जिसके कारण उनकी प्रजा भी संगीत में बहुत अधिक रुचि लेती थी। इसका सबसे बड़ा उदाहरण ये है कि यहां के प्रत्येक गांव में एक ना एक कलाकार जरूर हुआ है, चाहे वो शास्त्रीय संगीत में निपुण हो या फिर लोक संगीत में।

संदर्भ सूची :–

1. https://navbharattimes.indiatimes.com
2. भारतीय संगीत की परंपरा, मंजरी जोशी।
3. संगीत मैनुअल, डॉ. मृत्युंजय शर्मा, प्रोफेसर राम नारायण त्रिपाठी, एच. जी. पब्लिकेशन।
4. भारतीय संगीत एक वैज्ञानिक विश्लेषण, स्वतंत्र शर्मा, पृष्ठ 3।
5. शास्त्रीय संगीत का विकास डॉ. अमिता शर्मा, प्रकाशन ईस्टन बुक लिंक एडिशन 2000।
6. संगीत मैनुअल, डॉ. मृत्युंजय शर्मा, प्रोफेसर राम नारायण त्रिपाठी, एच. जी. पब्लिकेशन।
7. hi.m.wikipedia.org
8. भारतीय शास्त्रीय संगीत, www.jagranjosh.com
9. देवराज सिरोहीवाल, इतिहासकार और पुरातत्विद, हरियाणा संग्रहालयों के अधिकृत कोर्डीनेटर।
10. https://jind.gov.in